Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

विश्व में हिन्दी भाषा की लोकप्रियता

Suman Bala*

Department of Hindi, S. D. Girls College, Hansi, Haryana

सारांश – ***हिन्दी भाषा एक बड़े समाज की भाषा है। भारत की भाषायी स्थिति और हिन्दी के स्थान को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी आज भारतीय समाज के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा है। यह गर्व की बात है कि भारत ही ऐसा एकमात्र देश है जिसकी 5 भाषाएं विश्व की 16 प्रमुख भाषाओं की सूची में शामिल है और उसमें एक है हिन्दी भाषा। हिन्दी भाषा की अविरल धारा शताब्दियों से प्रवाहित होते हुए अपने वास्तविक स्वरुप को प्राप्त करती है। इसकी उत्पति एवं विकास की लम्बी प्रक्रिया है। वस्तुतः हिन्दी भाषा को ईरानियों की देन माना गया है 'हिन्दी' फारसी भाषा का शब्द है व हिन्दी शब्द की उत्पति सिंध से हुई है क्योंकि ईरानी भाषा में से 'स' को 'ह' बोला जाता है। वास्तव में हिन्दी शब्द सिंधु का प्रतिरुप है।***

----------X----------

डॉ. हरिचरण वर्मा के अनुसार 'हिन्दी' मूलतः सिंधु शब्द का बदलारुप 'सिन्धु से 'हिन्दू' 'हिन्द' के साथ 'ई' प्रत्यय जोड़कर हिन्दी बना। हिन्दी अब केवल उतर भारत की भाषा ही नही, बल्कि समस्त भारत की राष्ट्रभाषा राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रुप में विद्यमान है। आज यह देश की मानक भाषा के रुप में विराजमान है। यह हमारी संस्कृति, अस्मिता चेतना और हमारे स्वाभिमान की भाषा है। सरस्वती पाण्डेय जी कहते है कि हिन्दी भाषा को भारतीय संविधान सभा के द्वारा 14 सितम्बर 1949 ई0 को हिन्दी भाषा को राजभाषा की मान्यता प्रदान की गई व इसी दिन को अब हिन्दी दिवस के रुप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान के भाग 17, आठवी अनुसूची व अनुच्छेद 343-351 तक राजभाषा का संविधान में प्रावधान है। दक्षिण से उतर भारतीय धर्म व संस्कृति को समझने का माध्यम हिन्दुस्तानी भाषा ही रहा करती थी। गंगा, काशी, हरिद्वार व वृन्दावन आदि तीर्थस्थलों की यात्रा करने के इच्छुक दक्षिण भारतीय भी हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्साहित रहते थे उन्होंने सूर, उलसी, मीरा, कबीर, आदि सन्तों के भजन व प्रवचनों को सुनने के लिए अवष्य ही हिन्दी सीखी होगी।

विश्व में हिन्दी की लोकप्रियता

वाशिंगटन विष्वविद्यालय के प्रोफेसर सिडनी कुलबर्ट द्वारा 1970ई. में इकट्ठे किए गए आंकड़ों के अनुसार हिन्दी विश्व में तीन बड़ी भाषाओं में से एक है, शेष दो भाषाएं चीनी और अंग्रेजी। हिन्दी एशिया महाद्वीप की ही नही बल्कि विश्व में हिन्दी भाषियों की संख्या वर्तमान में अंग्रेजी जानने वालों से भी अधिक बढ़ती जा रही है। वर्तमान में हिन्दी के माध्यम से ही विश्व की जनता से भारत की जनता का संवेदनात्मक रिश्ता कायम हुआ है। प्रो. हरमोहेन्द्र सिंह का कहना है कि 'अमेरिका व कनाड़ा' जैसे देशों में हिन्दी भाषा की उन्नति तथा विकास का मसौदा तैयार कर संसद में अलग से बजट पारित किया गया। अतः विश्व में हिन्दी का स्थान उसकी समाहार शक्ति और विशालता का परिचय है। विश्व बाजार में भारत और दक्षिण एशियाई संगठन की बढ़ती हुई भूमिका की पृष्टभूमि में हिन्दी के महत्व में वृद्धि होती जा रही है। 21वीं सदी में वैश्विक बाजार में देखा जाए तो विश्व के एक बड़े बाजार में शिक्षित -अशिक्षितों के व्यवहार की भाषा भी है। चीन, इंग्लैंड, अमेरिका तथा अन्य यूरोपीय देशों में व्यापार के आयात-निर्यात के लिए किसी एक भाषा की आवश्यकता को पूरा करती है हिन्दी भाषा। यह एक बड़े समाज की भाषा है उसका एक बृहतर रुप भी है। जिसमें न केवल भारत की बल्कि भारत के बाहर त्रिनिदाद, मॉरिशस, फिजी, अमेरिका, इण्डोनेशिया, मलेशिया व गुयाना जैसे देशों में हिन्दी के अनेक रुप विकसित हो रहे है वे भी शामिल है।

मॉरिशस में हिन्दीः-

आज दुनिया के 30 देशों में फैले 100 से अधिक विश्वविद्यालयों, भाषा संस्थानों, अध्ययन केन्द्रो में हिन्दी का पठन और पाठन हो रहा है। दुनिया के लगभग 137 देशों में बसे असंख्य हिन्दी भाषियों के मन में कभी यह विचार नहीं आ सकता था कि भारत से बाहर किसी देश की संसद हिन्दी के वैश्विक प्रचार के लिए एक विधायक पारित करके एक संस्था का निर्माण करेगी। यह विचार तब साकार हुआ जब

www.ignited.in

मॉरिशस की संसद ने 12 नवम्बर 2002 के अधिनियम के तहत विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना की। भारत सरकार और मॉरिशस सरकार दोनों के सहयोग से एक अभिनव संस्था का जन्म हुआ। मॉरिशस में 1975 ई0 में हिन्दी का प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ जिसके अध्यक्ष शिवसागर गुलाम ने विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना का प्रस्ताव रखा। इस सचिवालय की तरफ से प्रतिवर्ष विशेशांक के रुप में 'विश्व हिन्दी पत्रिका' तथा विश्व हिन्दी समाचार का प्रकाशन हो रहा है। मॉरिशस के अभिमन्यु अनन्त ने 200 कहानियों व 14 उपन्यासों की स्थापना करके हिन्दी के मान को बढ़ाया है व 'लाल पसीना' इनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। हिन्दी भाषा को वैश्विक भाषा के रुप में प्रोत्साहन देने व अन्तराष्ट्रीय स्तर हिन्दी के प्रति जागरुकता पैदा करने के उद्देश्य से 17 जनवरी 1975 से विश्व में हिन्दी सम्मेलनों की श्रंखला आरम्भ की गयी। मॉरिशस का यह विश्व हिन्दी सम्मेलन विश्वभर में हिन्दी को बढ़ावा देने का एक प्रमुख पडाव साबित हुआ। इसी तरह अगस्त 2015 में भोपाल में हुए 10वें हिन्दी सम्मेलन से पनपी ऊर्जा व सक्रियता देने के लिए 11वें (ग्यारहवें) सम्मेलन के लिए भी मॉरिशस का चयन किया गया व "हिन्दी विश्व भारतीय संस्कृति" को केन्द्रीय विषय रखा। युवा पीढ़ी में सृजनात्मकता का विकास हो सके। हिन्दी लेखक संघ भी अनेक कार्यक्रमों और पुस्तक प्रकाशन के माध्यम से हिन्दी के उन्नयन में संलग्न है। इनमें आर्य सभा मॉरिशस, आर्य रवि वेद प्रचारिणी सभा, आदि की भूमिका प्रमुख है। मॉरिशस में कला और संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दी एकाकी नाटकों की प्रतियोगिता होती है, जिनमें अनेक कालाकार व हिन्दी स्पीकिंग यूनियन द्वारा कहानी, कविता और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है जिससे युवा पीढ़ी में सृजनात्मकता का विकास हो सके। हिन्दी लेखक संघ भी अनेक कार्यक्रमों और पुस्तक प्रकाशन के माध्यम से हिन्दी के उन्नयन में सलंग्न है।

अमेरिका में हिन्दी-

हिन्दी की लोकप्रियता को ध्यान में रखकर अमेरिका में यह आवष्यक समझा गया कि हिन्दी का शिक्षण वैज्ञानिक पद्धति से स्थापित किया जाए। हेनरी, केली, जेम्सगियर, जेम्स स्टोन आदि विद्वानों के द्वारा हिन्दी की षिक्षण पद्धति व पाठ्य पुस्तकों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। बाल गोबिन्द मिश्र, रामनाथ शर्मा आदि के साथ भारतीय विद्वानों का भी योगदान रहा है। 11 सितम्बर 1893 में शिकागों में सर्व-धर्म सम्मेलन हुआ था जिसमें स्वामी जी ने अपने भाषण की शुरुआत यह कह कर की थीः-

"अमेरिका के भाईयों और बहनों आपके इस प्यार भरे स्वागत से मेरा हृदय अपार खुशी से भर गया।"

स्वामी जी के इस भाषण को सुनकर अमेरिका वासी प्रसन्नचित हो जाते है और उनकी प्रभावपूर्ण व जोशीली आवाज को सुनने के लिए जिन अंग्रेजों के पास समय का अभाव था वह भी घंटों पहले आकार बैठ जाते थे। स्वामी विवेकानन्द ने समाजहित व हिन्दी भाषा के गौरव से देश व पाष्चात्य जगत का परिचित कराया। किसी हिन्दी कवि ने स्वामी जी के विषय में ठीक ही कहा हैः-

भारत माँ की वो सन्तान है।

जिसने सभी पाखण्डों को ठुकरा दिया

सच्चा आध्यत्मिक ज्ञान दिया

कर विश्व भ्रमण जिसने

पूर्व तथा पश्चिम को सुमेल किया

जो शिकागो सर्वधर्म को सुमेल में

भारत का मान बढ़ाया।

1958 में अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में हिन्दी सीखने वालों की संख्या 14 थी 1974-75 में यह बढ़कर 379 हो गई। इन आंकड़ों से ही अमेरिका जैसे देश में हिन्दी की प्रगति का पता चलता है।

फ़िजी में हिन्दीः-

फ़िजी में हिन्दी का प्रवेश लगभग 1880 में हुआ जब गिरमिटियें मजदूरी करते थे व रात को रामायण के पद गाते थे। स्वर्गीय पंडित तोताराम सनाढ्य जो गिरमिट मजदूरों के नेता ने 'फिजी में घासलेटी साहित्य का दुष्परिणाम' नामक निबन्ध लिखा था।

हिन्दी को बढ़ावा देने में फिजी रेडियों के योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता है, फ़िजी हिन्दी महापरिषद दनाम की संस्था भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित करती है। फ़िजी का सूचना विभाग 'शंख' नामक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी में निरन्तर कर रहा है। फ़िजी में जोगिन्द्र काम्बली को 'फ़िजी का प्रेमचन्द' कहा जाता है।

www.ignited.in

इण्डोनेशिया में हिन्दीः-

वास्तव में इण्डोनेशिया शब्द का अर्थ ही भारतीय द्वीप समूह है यहाँ लगभग 200 से भी ज्यादा भाषाऐं बोली जाती है। यह देश भारत का पड़ोसी देश होने के साथ सांस्कृतिक रुप से भी निकटतम है। हिन्दी को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए विदेशी लेखकों व साहित्यकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जैसे मैक्सयूलर, स्लेगन, सिल्वालेवी, फादर कामिल बुल्के आदि। फादर कामिल बुल्के ने अपने एक लेख में लिखा है कि 35 वर्ष पहले सन् 1982 के आस-पास मेरे एक मित्र ने जावा में एक मुस्लिम शिक्षक को रामायण पढ़ते देखा तो पूछा कि आप तो मुस्लिम हा फिर रामायण क्यों पढ़ते हो तो उत्तर मिला मैं अच्छा इन्सान बनने के लिए रामायण पढ़ता हूँ। फादर कामिल बुल्के ने हिन्दी के विषय में कहा था कि "हिन्दी न केवल देश के करोड़ों लोगों की सांस्कृतिक व सम्पर्क भाषा है वरन बोलने और समझने वालों की संख्या की दृष्टि से तीसरी भाषा है।"

"पूर्व दिवंगत प्रधानमंत्री अटल बिहारी जी का नाम हिन्दी के योगदान में भुलाया नहीं जा सकता। सन् 1977 में उन्होंने हिन्दी भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ स्थान स्थापित करने में अहम् भूमिका निभाई है। वाकपटुता के लिए प्रसिद्ध वाजपेयी ने सन् 1977 में संयुक्त राष्ट्रमहासभा को सम्बोधित करते हुए अपना भाषण हिन्दी में दिया था, क्योंकि यह वैश्विक मंच पर प्रमुख भाषा होने का प्रमाण था।

निष्कर्ष

हिन्दी का बदलता स्वरुप उस प्रभात की लाली के समान है जो हृदय में नई उमंग जिज्ञासा को जागृत करती है। हिन्दी सम्पूर्ण भारत वर्ष को एक माला के मनकों की तरह एक सूत्र में बाँधे रखती है। जन मानस की आशाओं के अनुरुप हिन्दी का हर क्षैत्र में द्रुतगति से विकास हो रहा है। भौगोलिक तथा राजनैतिक विभिन्नताओं के होते भी भारत की सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने में हिन्दी भाषा का प्रमुख स्थान रहा है। यह समस्त विश्व को जोड़ने वाली सामाजिक कड़ी के रुप में उभरी है व हिन्दी मानवता के साथ-साथ भारतीय अस्मिता की पहचान है विश्व में हिन्दी भाषा का सूर्य उदय हो गया है, ये कभी अस्त नहीं होगा। इसमें सूर्य के अस्त होने की प्राकृतिक अवधारणा निरर्थक करने की क्षमता है।

हिन्दी आज करोड़ों भारतीयों के मस्तिष्क को ऊर्जा व शक्ति देने वाली भाषा है और अंत में भारतेन्दु हरिश्चंद्र की प्रसिद्ध पंक्तियों के साथ धन्यवाद करती हुई मैं यही कहना चाहूंगी कि हिन्दी एक दिन अपना विशालतम साम्राज्य को स्थापित करेगी।

"निज भाषा उन्नति अहैं सब उन्नति के मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय के सूल।"

संदर्भ सूचीः-

1. विश्व हिंदी सम्मेलन अंक (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय)
2. विश्व भाषा हिंदी संस्कृति और समाज (हजारी प्रसाद द्विवेदी)
3. डॉ. अशोक तिवारी, हिन्दी प्रतियोगिता साहित्य सीरीन पृष्ठ संख्या 01
4. डॉ. अनुपमा सेठ, व्याकरण भारती
5. अमर उजाला
6. उपकार (यू0 जी0 सी0) नेट
7. विकिपीडिया: गूगल

Corresponding Author

Suman Bala*

Department of Hindi, S. D. Girls College, Hansi, Haryana

sumanbala511979@gmail.com